SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-2, खण्ड-1, अक्टूबर - दिसम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

भारतीय सनातन धर्म में मूर्तिकला एवं चित्रकला का योगदान

प्रदीप कुमार निवोरिया
ललित कला
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

प्रस्तावना

'कला' कलाकार की अभिव्यक्ति मात्र नहीं है, वरन यह सामाजिक,सांस्कृतिक एवं धार्मिक सत्ता का प्रतिदर्श भी है। कला ने मानव संस्कृति को समृद्ध स्वरूप प्रदान करने में अहम् भूमिका निभाई। प्रारम्भ में मनुष्य ने सरल रेखाओं द्वारा गुफाओं की दीवारों पर चित्रांकन किया। कला के उत्थान में धर्म अति सहायक सिद्ध हुए, क्योंकि भारतीय सनातन संस्कृति में धर्म और कला एक दूसरे के पर्याय सिद्ध हुए। भारतीय आध्यात्म एवं ज्ञान परम्परा में 'कला' मील का पत्थर सवित हुई। अर्थात कहा जा सकता है कि कला और धर्म एक दूसरे के पूरक हैं।

विस्तार

सनातन धर्म विश्व का सबसे प्राचीन धर्म माना जाता है। सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार कला के माध्यम से ही हुआ क्योंकि सनातन धर्म में उपासक साकार ब्रहम की उपासना करता है और भारतीय सनातन धर्मग्रंथों में ३६ करोड़ देवी-देवताओं का वर्णन प्राप्त होता है। देवताओं के कार्यानुसार भेष-भूसा, वस्त्र रंग, आभूषण, आयुध, वाहन आदि उनके स्वरूप का सम्पूर्ण वर्णन **"भारतीय प्रतिमा विज्ञानं"** में प्राप्त होता है। 'प्रतिमा विज्ञान' में वर्णित देवी-देवताओं के स्वरूप के अनुसार ही कलाकार ने अपनी कल्पना शक्ति व कार्यकुशलता से देवी-देवताओं के विविध स्वरूपों की प्रतिमाओं एवं चित्रों का निर्माण किया जिससे भारतीय सनातन धर्म के आराध्यों 'भगवान्' (देवी/देवताओं) का स्वरूप जन-मानस के सामने प्रतिविम्वित हुआ। सर्वप्रथम कलाकार/मूर्तिकार ने पाषाण को सुलभ एवं उपुयक्त माध्यम मानकर अपने छैनी, हथौड़े की थाप से ईश्वर के स्वरूप को गड़ना प्रारम्भ किया और कलाकार के अथक प्रयास से सनातन धर्म के देवी-देवताओं के वाहय स्वरूप का निर्माण हुआ। इसे कलाकार की कल्पना शक्ति कहें या ईश्वरीय प्रेरणा यह बड़ी चर्चा का विषय बन जाता है। कुछ विद्वान कलाकार को श्रेष्ठ कहते हैं,

जिसने ईश्वर के अदभुत स्वरूप का निर्माण कर भक्तों को उनके आराध्य के दर्शन कराये किन्तु कुछ विद्वानों का मत है कि 'ईश्वर' की ही प्रेरणा से कलाकार/मूर्तिकार उनके स्वरूप का सजीव अंकन कर पाया। यह दोनों ही मत तर्क संगत हैं।

सनातन (हिन्दू) धर्म के उदय के लिखित साक्ष्य वैदिक काल (१५०० - ६०० ई० पूर्व) से प्राप्त होते हैं जिसमें **'महर्षि वेदव्यास जी'** ने चार वेद- ऋग्वेद, सामवेद, अथर्वेद, यजुर्वेद, १८ पुराण एवं १०८ उपनिषद तथा दो महाकाव्य 'रामायण, महाभारत' आदि की रचना हुई जिसमें सनातन धर्म के देवी-देवताओं, यज्ञ, धार्मिक कर्म कांडीय प्रक्रिया का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। **मार्कंडेय** मुनि द्वारा रचित **'विष्णु धर्मोत्तर पुराण'** में चित्र रचना हेतु **'चित्र सूत्रम्'** का वर्णन **३५-४३** तक नौं अध्यायों में चित्र रचना का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। इसी वर्णन के आधार पर कलाकारों ने चित्र एवं शिल्प रचना की, जो धर्म के साथ मिलकर एक महान संस्कृति को बल प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुई। कला और धर्म के विकास के साथ-साथ कला के विभिन्न स्वरूपों का भी विकास हुआ। जिसमें चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तु/स्थापत्यकला, संगीतकला एवं नृत्यकला आदि आते हैं।

धर्म और कला

धार्मिक प्रचार-प्रसार हेतु चित्रकला अति सहायक सिद्ध हुई जिसके प्रमाण बौद्ध धर्म प्रचार में सर्बाधिक मिलते हैं। बौद्ध भिक्षु भगवान् बुद्ध की कथाओं पर आधारित चित्रपटों को अपने साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर लेजाकर उनकी कथाओं का वर्णन करते थे। सनातन (हिन्दू) धर्म में मूर्ति एवं मन्दिर स्थापत्यकला के उदहारण स्वरूप विशाल मन्दिरों और मूर्तियों का निर्माण किया गया, मन्दिरों की अंत: एवं वाह्य दीवारों पर हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियों को उकेरा गया। जिससे सनातन (हिन्दू) धर्म की भव्यता ने भारतीय सामान्य जन-मानस को अपनी ओर आकर्षित किया तथा धर्म के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध हुई।

यदि हम भारतीय मूर्तिकला के इतिहास पर नजर डालें तो हम पाते हैं कि भारतीय मूर्तिकला एवं स्थापत्यकला का सही रूप से विकास **'मौर्य काल' (३२३ -१८७ ई० पूर्व)** से प्राप्त

अंक-2, खण्ड-1, अक्टूबर - दिसम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

होता है। जिसमें सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को अपनाकर बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु देश के विभिन्न स्थानों पर स्तूप, बौद्ध विहार, स्तम्भ, शिलालेखों तथा अनेक बौद्ध प्रतिमाओं का निर्माण कराया। जिसमें पकी हुई ईटों व बलुए पत्थर का प्रयोग किया गया। इस काल में मूर्तिकला की दो शैलियाँ विकसित हुई।

१- **गंधार शैली-** इस शैली में भगवान् बुद्ध की काले स्लेटी पत्थर में हजारों-लाखों प्रतिमाओं का निर्माण हुआ, जो देश विदेश के सग्रहालयों में संगृहीत हैं। इस शैली की बुद्ध प्रतिमाओं में ग्रीक कला का प्रभाव परिलक्षित होता है।

२- **मथुरा शैली-** यह शैली मथुरा क्षेत्र में विकशित हुई इस शैली में लाल बलुए पत्थर में बुद्ध तथा हिन्दू सनातन धर्म के देवी-देवताओं की प्रतिमाओं का निर्माण किया गया। यह प्रतिमाएं सजीव तथा इनका निर्माण भारतीय प्रतिमा निर्माण पद्धति पर हुआ है।

सनातन धर्म के मन्दिर एवं मूर्तियों का निर्माण **'गुप्त काल'** से परिलक्षित होता है। मन्दिर निर्माण शैली में प्रारम्भ में शिखर रहित मन्दिरों का निर्माण हुआ, प्रथम शिखर युक्त मन्दिर बुन्देलखण्ड के ललितपुर जिले के देवगढ़ में स्थित **'दशावतार मन्दिर'** है जो भगवान् विष्णु को समर्पित है। इस मन्दिर की अदभुत शिल्पकला दर्शनीय है, मन्दिर की तीनों दीवारों के वाह्य फलकों पर क्रमशः 'अनन्तशायी विष्णु, गजेन्द्रमोक्ष, नर-नारायण' के फलक चित्र उकेरे गए हैं। इस काल में मन्दिर निर्माण की तीन शैलियाँ विकशित हुई

१- **नागर शैली-** इस शैली के मन्दिर आधार से शिखर तक चतुष्कोणीय बनाये जाते हैं, ये मन्दिर आठ भागों से मिलकर बने होते हैं- मूल (आधार), गर्भगृह मसरक, जंघा (दीवार), कपोत, शिखर, गल, वर्तुलाकार आमकल, कुम्भ (सूल सहित कलश) ।

२- **द्रविण शैली-** इस शैली के मन्दिर के गोपुरम (प्रवेश द्वार) बनाया जाता है तथा गर्भगृह वर्गाकार या अष्टकोंणीय, पिरामिड नुमा शिखर तथा मण्डप बनाये जाते हैं।

३- **बेसर शैली-** यह मन्दिर आधार से शिखर तक वृत्ताकार बनाये जाते हैं।

इन्हीं शैलियों में सम्पूर्ण भारत में विशाल मन्दिरों का निर्माण हुआ तथा उनकी वाह्य तथा अंत: दीवारों पर हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियों को उकेरा गया। मन्दिर को कलात्मक

सौन्दर्य प्रदान करने के लिए अलंकारिक फूल-पत्ति, वेल-बूटे, पशु-पक्षी, सारदुल आदि द्वारा अदभुत रूप से सुसज्जित किया जाता है। गर्भगृह में मुख्य देवता की मनमोहक सुन्दर प्रतिमा को विराजमान किया जाता है, जो धातु, संगमरमर, पाषाण तथा लकड़ी आदि अन्य पदार्थो से बनाई जाती हैं। भारतीय शैली में निर्मित चित्र तथा मूर्तियों में आध्यात्मिकता के दर्शन होते हैं, जिनके दर्शन मात्र से मन-मस्तिष्क को अभूतपूर्व शान्ति का अनुभव प्राप्त होता है। ईश्वर के मनमोहक स्वरूप के दर्शन से सभी भक्तगण खो जाते हैं तथा साधारण जनता आत्म विभोर हो उठती है और सनातन धर्म को अपना लेती है। यहाँ ईश्वरीय शक्ति तथा भारतीय सौन्दर्य सिद्धान्त कार्य करता है, सौन्दर्य सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति सुन्दर दिखने वाली वस्तुओं की ओर आकर्षित होता है और कुरूप दिखने वाली से दूर भागता है। इसीलिए कलाकार ने अपनी कृतियों में भारतीय **'षडंग सिद्धान्त'** का अनुसरण किया है। जिसमें मुख्य छह: मूल तत्व विद्यमान होते है जो **वात्सायन** द्वारा रचित **"कामसूत्र"** के इस श्लोक में वर्णित हैं-

"रूपभेद: प्रमाण भाव, लावण्य योजनं ।
सादृश्य वर्णिका भंग, इति चित्र षडंगकम ।।"

अर्थात जिस कला कृति में इन छः तत्वों को सम्मलित कर निर्माण किया जाये वह कलाकृति सुन्दर ही बनेगी। यदि कलाकृति में इन तत्वों में से कोई एक भी तत्व न हो तो कलाकृति भद्दी दिखने लगती है। अत: भारतीय शिल्पियों ने इस बात को ध्यान में रखकर ईश्वर की प्रतिमाओं को उकेरा, जो आज विश्व में अदभुत कला के उदहारण हैं। यह विशाल मन्दिर एवं मूर्तियाँ सनातन संस्कृति को देश-विदेश में प्रचारित करने में सहायक सिद्ध हुए तथा सनातन संस्कृति ने देश ही नहीं अपितु विदेशों में भी आध्यात्मिक स्थान प्राप्त किया।

भारतीय सनातन संस्कृति के विकास में मूर्तिकला एवं चित्रकला का सर्वाधिक योगदान रहा। भारतीय सनातन धर्म के देवी-देवताओं की प्रतिमाओं को गढ़ने में शिल्पियों ने उस देवी-देवता के भाव-भंगिमा भावाकृति के साथ-साथ उनमें विद्यमान प्रेम, दया, करुणा को भी उकेरने का प्रयास किया, और वह इस कार्य में सफल सिद्ध भी हुआ, जिसमें ब्रह्मा एवं विष्णु के

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

अंक-2, खण्ड-1, अक्टूबर - दिसम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

दशावतारों से लेकर शिव के विभिन्न स्वरूपों को उकेरा गया, राम, कृष्ण , गणेश, हनुमान, इन्द्र, सूर्य, चन्द्रमा, सप्तऋषि अथवा देवियों में माता लक्ष्मी, सरस्वती, पर्वती, दुर्गाजी, राधा रानी, माँ काली सहित भारतीय पौराणिक कथाओं तथा कथानकों के आधार पर करोड़ों देवी-देवताओं को शिल्पों में उकेरा गया है। यही कारण है कि मूर्ति एवं चित्रों के द्वारा सनातन (हिन्दू) धर्म ने चारों दिशाओं में अपना परचम लहरा दिया।

मूर्तिकला के साथ-साथ चित्रकला ने भी सनातन धर्म को विकसित करने में अहम् भूमिका निभाई, जिसके उदहारण हमें गुफा चित्रों में देखने को मिलते हैं जिनमें जोगीमारा, अजंता, एलोरा, सित्तनवासल, वाघ, सिगिरिया आदि गुफाओं में आज भी सुन्दर एवं सजीव चित्र विद्यमान हैं। पूर्व समय के कलाकारों के आलावा भारतीय आधुनिक कलाकारों ने भी सनातन धर्म को जन-जन तक पहुँचाने के लिए अपना योगदान दिया, जिसमें भारतीय आधुनिक कला के जन्मदाता **'राजा रवि वर्मा'** ने हिन्दू धर्म की पौराणिक कथाओं पर आधारित सुन्दर एवं सजीव चित्रों का निर्माण किया। इन्होने अपने चित्र तथा सनातन धर्म को घर-घर पहुँचाने के उद्देश्य से लिथोग्रफिक प्रेस की स्थापना की। जिसमें उनके द्वारा बनाये गए चित्रों की लाखों प्रतियाँ बनाई गईं और इसके फलस्वरूप हिन्दू देवी-देवताओं के चित्र देश के घर-घर में पूजे जाते हैं। इनके आलावा अन्य भारतीय कलाकारों ने अनवरत रूप से सनातन हिन्दू धर्म पर आधारित चित्रों का निर्माण किया और हिन्दू धर्म के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया। मूर्तिकला, चित्रकला के साथ-साथ भारतीय संगीत कला एवं नृत्य कला ने भी भारतीय सनातन हिन्दू धर्म को विकशित करने में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया।

निष्कर्ष

उक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि भारतीय सनातन (हिन्दू) धर्म की ज्ञान परम्परा में मूर्तिकला, स्थापत्यकला, चित्रकला, संगीतकला, नृत्यकला आदि समस्त ललित कलाओं का अभूतपूर्व योगदान रहा। सनातन धर्म के देवी-देवताओं की प्रतिमाओं में ललित कलाओं के प्रयोग से आध्यात्मिक तत्व उत्पन्न हो जाता है, जिसे दर्शक अथवा श्रोता आत्मसात करता है जिससे

अंक-2, खण्ड-1, अक्टूबर - दिसम्बर 2024 E-ISSN : 2584-2900

भक्त और भगवान् के वीच एक अटूट आस्था का सम्बन्ध स्थापित हो जाता है जिससे भक्त अपने भगवान् के दर्शन हेतु देवालयों में निरन्तर जाकर अपने आराध्य की उपासना में लीन हो जाता है तथा शारीरिक, आत्मिक आनन्द की अनुभूति को प्राप्त करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१- वर्मा, डॉ. अविनास बहादुर - 'भारतीय चित्रकला का इतिहास', बरेली, 1984

२- शर्मा, गोपाल कृष्ण, जैन, हुकुम चन्द्र - 'भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2019 सप्तम संस्करण।

३- डॉ. पवन वीणा - 'भारतीय मूर्तिकला का इतिहास', ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली,1991

४- दुबे, राकेश बी. - 'प्राचीन भारत का इतिहास' पियूष बुक पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2001

५- गुप्त, डॉ. परमेश्वरी लाल - 'भारतीय वास्तुकला', वि.वि. प्रकाशन, वाराणसी,1989

६- श्रीवास्तव, डॉ. ब्रजभूषण, 'प्राचीन प्रतिमा विज्ञानं एवं मूर्तिकला', वि.वि. प्रकाशन, वाराणसी, 2001

SKU SHODH शोध संचार SANCHAR